नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग नई पहल

स्त्री अध्ययन के क्षेत्र में उत्कृष्ट केन्द्र बनाने का प्रयास – डॉ. सुप्रिया पाठक

वर्धा, 24 मई 2017: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने हाल के वर्षों में अनेक नई पहले शुरू की है। विभाग को स्त्री अध्ययन के क्षेत्र में उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में बनाया जा रहा है। यह जानकारी विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने दी। विभाग के बहुआयामी परिदृश्य को लेकर उन्होंने बताया कि वस्तुतः ज्ञान की सत्ता-संरचना पर 'ज्ञान-बहिष्कृतों' द्वारा किया गया एक सैद्धांतिक-दार्शनिक हस्तक्षेप है,जो प्रत्येक व्यक्ति की बराबरी एवं एक समतामूलक समाज की स्थापना में विश्वास करता है। यह समाज के प्रत्येक तबके के अनुभवों को केन्द्र में रखकर ज्ञान के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है जो कि एकपक्षीय ज्ञान की रूढ़ सीमाओं को तोड़कर ज्ञान को उसके बहुआयामी व समग्र रूप में प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि स्त्री अध्ययन यह केवल एक विषय मात्र नहीं, एक परिप्रेक्ष्य है जो हमें दुनिया को देखने का एक नया नज़रिया देता है, और इसीलिए ज्ञानानुशासन की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए यह एक अन्तर-अनुशासनिक, बहु-अनुशासनिक एवं परा-अनुशासनिक स्वरूप अख़्तियार करता है। स्त्री अध्ययन की शुरूआत इस तथ्य के साथ होती है कि स्त्री या पुरुष होना मात्र जैविकीय ही नहीं, सामाजिक निर्मिति भी है और इस सामाजिक निर्मिति के आधार पर ही दुनिया के सारे ज्ञान-विज्ञान रचे गए हैं।

उनका मानना है कि एक अकादमिक अनुशासन के बतौर 'स्त्री अध्ययन' सिर्फ स्त्रियों का या स्त्रियों के लिए ही नहीं है, बल्कि यह विभिन्नताओं का संयोजन है। यह 'सम्पूर्ण मानवता' का अध्ययन है जिसके जरिए हम हाशिए पर खड़े उन सभी समूहों का अध्ययन करते हैं जिन्हें मुख्यधारा का ज्ञान नजरअंदाज करता है। एक विषय के रूप में यह महज कुछ जानकारियों या सूचनाओं को जान लेने या सीख लेने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह जेंडरगत विभेदों के बरक्स उस समतामूलक स्त्रीवादी चेतना को अपने जीवन-व्यवहारों में आत्मसात करने से भी संबंधित है जो बदलाव की शैक्षणिकराजनीति का जरिया हैं। अतएव सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन इस विषय का केन्द्रीय अभिप्रेरक बिन्दु है जिसे भारतीय स्त्री-अध्ययन संगठन के संस्थापक सदस्यों द्वारा एक 'शैक्षणिक रणनीति' के रूप में स्वीकार किया गया है।

विदित हो कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयमें वर्ष 2003 में स्त्री-अध्ययन विभाग शुरू हुआ। यह विभाग देश में स्त्री-अध्ययन का अपनी तरह का इकलौता केंद्र है जो भारत के संदर्भ में इस अंग्रेजीमय विमर्श को हिंदी की व्यापक दुनिया से जोड़ता है और इस तरह भाषाई विविधता लेकिन अंग्रेजी श्रेष्ठताबोध वाले इस देश में ज्ञान के लोकतांत्रिकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।हम इसे स्त्री-विमर्श का अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

विभाग के लक्ष्य के बारे में पुछने पर उन्होंने कहा कि स्त्री-अध्ययन के मौजूदा दार्शनिक-सैद्धान्तिक विमर्श का हिंदी के बौद्धिक-सांस्कृतिक जगत से अकादमिक संबंध बनाते हुए भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट ज्ञान की संभावनाओं को साकार रूप देना और हिंदी में ज्ञान-विज्ञान के मौलिक चिंतन के विशिष्ट ढंग के जरिए स्त्री-अध्ययन की सैद्धांतिकी को देशीय संदर्भों में विकसित करना।
विभाग के उद्देश्यों को लेकर उनका कहना है कि हिंदी माध्यम में व्यवस्था की सत्तापरक संरचना की पड़ताल करते हुए जेंडर संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करना, हिंदी भाषा के वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में स्त्री विषयक प्रश्नों एवं अधिकारों से विद्यार्थियों को अवगत कराना, सामाजिक-बौद्धिक हस्तक्षेप के एक संसाधन केंद्र (रिसोर्स सेंटर) के बतौर खुद को समर्थ बनाना, जेंडर विमर्श को हिंदी प्रदेश के व्यापक समुदाय के बीच प्रसारित करना, परंपरागत विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन का जरिया बनते हुए अकादमिक एवं सामाजिक यथार्थ के बीच के अंतर को समाप्त करना, स्त्री अध्ययन के क्षेत्र में उत्कृष्ट अध्ययन केन्द्र (Center of excellence) के रूप में विकसित करना।
विभाग की ओर से संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि विभाग में एम.ए. ,एम.फिल., पी.एचडी., स्नातकोत्तर डिप्लोमा, स्नातकोत्तर डिप्लोमा (देशज संस्कृति, भाषा और जेंडर) आदि पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं।
विभाग की ओर से किये गये शोध पर उन्होंने बताया कि स्त्रियों का विलुप्त इतिहास, ज्ञान उत्पादन की नारीवादी आलोचना, साहित्य और स्त्री: पढ़ने के तरीके/साहित्य मीडिया और जेंडर:, देखने के तरीके/सिनेमा टी.वी., पितृसत्ता, सामाजिक पुनरुत्पादन और यौनिकता, जाति, वर्ग और जेंडर, स्त्री और स्वास्थ्य, स्त्री और हिंसा, दक्षिण एशियाई साहित्य में, स्त्री जेंडर और विकास का राजनैतिक अर्थशास्त्र ,अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक विन्यास और सैन्यीकरण: सहमति और असहमति राज्य, विचारधारा, विधिक और शैक्षिक संस्थान राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद और जेंडर स्त्रीवादी अवधारणा/सिद्धांत विषयों पर शोध कार्य है।
विभाग मे आने वाले दिनों में महिला-अपराध,मानव-दुर्व्यापार (ह्यूमन ट्रैफिकिंग), भाषा और जेंडर,मध्य भारत में विस्थापन,सांस्कृतिक संकट (जेंडर के संदर्भ में), श्रम, अर्थव्यवस्था एवं जेंडर,साहित्य एवं जेंडर आदि विषयों पर शोध किया जाएगा।